International Journal of Home Science 2020; 6(3): 460-461

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(3): 460-461
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 09-08-2020
Accepted: 22-09-2020

अंजू कोहली
शोध छात्रा गृह विज्ञान, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

तृप्ती सिंह
विभागाध्यक्ष, आर0बी0एस0 कालेज, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, ईसीएम, गृह विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अंजू कोहली
शोध छात्रा गृह विज्ञान, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

छात्राओं की भोजन से सम्बन्धी बजट में योजना, नियंत्रण व मूल्यांकन से सम्बन्धित निर्णय लेने में भूमिका

अंजू कोहली, तृप्ती सिंह एवं नीलमा कुँवर

सारांश
बजट पारिवारिक आय–व्यय में संतुलन स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। परिवार के सदस्यों की कई आवयकताएं होती हैं परन्तु पारिवारिक आय सीमित होती है और उस सीमित आय से परिवचार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए एक अच्छे बजट के निर्माण की आवश्यकता होती है। परिवार के सदस्य अपनी सीमित आय से अधिकतम संतोष पाने के लिए बजट का निर्माण करते हैं। पारिवारिक आय के अनुसार विभिन्न मदों पर व्यय किया जाता है। बजट निर्माण का मुख्य उद्देश्य परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना एवं परिवार के सुख तथा संतोष में वृद्धि करना होता है। बजट में कुछ आय बचत के लिए भी रखी जाती है ताकि आकस्मिक आवश्यकता की स्थिति होने पर उस आय को व्यय किया जा सके। बजट एक निश्चित अवधि के पूर्व अनुमानित आय–व्यय के विस्तृत ब्योरे को कहते हैं। निश्चित आय से परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही बजट का मुख्य उद्देश्य होता है। परिवार के सदस्य अपनी आय के अनुसार विभिन्न मदों पर व्यय करते हैं और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। बजट पारिवारिक आय–व्यय में संतुलन बनाए रखता है। एक अच्छा बजट वह होता है जिसमें कुछ आय बचत के लिए भी रखी जाती है ताकि आकस्मिक खर्चों पर व्यय किया जा सके।

मुख्य शब्दः – बजट, नियंत्रण, मूल्यांकन

प्रस्तावनाः–
भोजन, पारिवारिक बजट का एक महत्वपूर्ण मद है। इस मद के अंतर्गत अनाज, फल, दूध, घी, मसाले इत्यादि पर किया जाने वाला व्यय सम्मिलित होता है। परिवार के सदस्य घर से बाहर होटल, कैंटीन आदि में जो भी भोजन करते हैं, वह व्यय भी इस मद में सम्मिलित होता है। इस मद में होने वाला व्यय परिवार की आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर करता है। प्रत्येक परिवार की आय का एक बड़ा भाग इस मद पर व्यय होता है, इसलिए गृह प्रबंधक को ऐसा बजट बनाना चाहिए जिसमें सीमित आय में भी परिवार के हर सदस्य को पौष्टिक भोजन प्राप्त हो सके।

उद्देश्य
- छात्राओं का भोजन से सम्बन्धित बजट में योजना, नियंत्रण व मूल्यांकन से सम्बन्धित निर्णय लेने में भूमिका ज्ञात करना।

अध्ययन पद्धति
यह अध्ययन गोरखपुर जिले के 6 महिला कालेजो में अध्ययनरत 300 छात्राओं पर किया गया है जो धन व्यवस्थापन और बजट बनाने में अपना योगदान देती हैं। इसमें चर और अचर आश्रितों का उपभोग किया गया है। सांख्यकीय उपकरण प्रतिशत, मध्य आदि का उपयोग किया गया है।

परिणाम

सारिणी–1 छात्राओं का आय के आधार पर वर्गीकरण

आय (रू0 में)	संख्या	प्रतिशत
5000 से कम	39	13.0
5001 – 10,000	168	56.0
10001 – 15,000	87	29.0
15001 – 20,000	6	2.0
कुल	300	100.0

आय के अनुसार वर्गीकरण करने पर 13 प्रतिशत की पारिवारिक आय रू0 5000 से कम थी, 57 प्रतिशत की आय रू0 5001–20,000 के बीच थी और वहीं 29 प्रतिशत की पारिवारिक आय रू0 15001–20,000 के बीच थी और गोरखपुर की महाविद्यालयीन छात्राओं के परिवार की औसत मासिक आय रू0 8,500 है।

सारिणी–2 परिवार में भोजन का बजट बनाना

भोजन का बजट बनाना	अंक	संख्या	प्रतिशत
स्वयं	3	66	22.0
माता	2	140	46.6
पिता	4	36	12.0
माता–पिता	5	58	19.3
अन्य	1		
कुल		300	100.0

परिवार में भोजन का बजट 22 प्रतिशत छात्रायें स्वयं बनाती है वहीं 46.6 प्रतिशत के घरों में माता बजट बनाती है, 12 प्रतिशत के यहां पिता, 19.3 प्रतिशत के यहां माता–पिता दोनों भोजन का बजट बनाते हैं।

सारिणी–3 क्रय मूल्यांकन

क्रय मूल्यांकन	अंक	संख्या	प्रतिशत
स्वयं	4	26	8.7
माता	3	26	8.7
पिता	4	44	14.7
माता–पिता	5	194	64.7
अन्य	1	10	3.2
कुल		300	100.0

8.7 प्रतिशत छात्रायें भोज्य वस्तु के क्रय का मूल्यांकन करती हैं वहीं 8.7 प्रतिशत के यहां माता, 14.6 प्रतिशत पिता क्रय का मूल्यांकन करते है, 64.7 प्रतिशत के यहां माता–पिता दोनों, वहीं 3.2 प्रतिशत के यहां अन्य।

निष्कर्ष

आज भी भारतीय परिवार के अनुसार लड़की पराई अमानत है। अर्थात उसका स्थान यहां नहीं बल्कि अन्यंत्र स्थान पर है। इस कारण उसकी दखलंदाजी किसी भी मामले में परिवार स्वीकार नहीं करता।

सुझाव

1. बदलते परिवेश में छात्राओं को यह हक दिया जाना चाहिए कि पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक निर्णय लेने के लिए वह स्वतंत्र है और उसके निर्णयों को भी महत्व दिया जाना चाहिए और समय–समय पर उसे निर्णय लेने हेतु उत्साहित करना चाहिए।
2. सामाजिक मान्यता से उबरना चाहिए जोकि यह सिखाती है कि लड़की परायी अमानत है। उसका घरेलू निर्णयों में महत्व नहीं है किन्तु यदि उसे घरेलू आर्थिक व्यवस्थापन में पहले से ही निपुण कर दिया जाय तो वह अन्यत्र स्थान पर भी निर्णय ले पायेगी।

संदर्भ

1. पाराशर, रेणु (2016). ''उत्तरी भारत की सहकारी समितियों में सामाजिक आर्थिक गतिविधियों पर विश्वविद्यालयों के छात्रों के विचार'' http://hdl.handle.net/10603/183432.http://shodhganga.in/handle/ 10603/183432
2. भारती, जी0 और यमुनादेवी, आर0 (2019). ''छात्रों के बीच धन प्रबंधन अभ्यास – एक अनुभवजन्य अध्ययन'' 2019, 6. e ISSN 2348-1269, print ISSN 2349-5138 http://ijrar.com/upload_issue/ijrar_issue_20542 857.pdf.